International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 813-815

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 813-815
www.allresearchjournal.com
Received: 03-01-2017
Accepted: 04-02-2017

श्रीमती उर्मिला पाण्डेय
शोधकर्त्ता, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स विश्वविद्यालय, आरंग, रायपुर (छ.ग.), भारत

डॉ. संजीत कुमार तिवारी
निर्देशकः–सहा. प्राध्यापक, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स विश्वविद्यालय, आरंग, रायपुर (छ.ग.), भारत

Correspondence
श्रीमती उर्मिला पाण्डेय
शोधकर्त्ता, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स विश्वविद्यालय, आरंग, रायपुर (छ.ग.), भारत

रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती उर्मिला पाण्डेय एवं डॉ. संजीत कुमार तिवारी

सारांश
किसी राष्ट्र की समृद्धि एवं वैभव सम्पन्नता का मूलभूत आधार शिक्षा का विकास है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का विकास कर समाज, राष्ट्र एवं विश्व को एक योग्य एवं कल्याणकारी नागरिक सौंपना है। वर्तमान में विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी ही देश के भावी नागरिक हैं। विद्यार्थी अपने शालेय जीवन के लगभग 5 से 8 घण्टे प्रतिदिन विद्यालय में व्यतीत करता है। शालेय वातावरण का विद्यार्थी के व्यक्तित्व, शारीरिक व मानसिक विकास पर परोक्ष व अपरोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है।

कूट शब्दः शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी, शालेय वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य

1. प्रस्तावना
शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा से मनुष्य में ज्ञान रूपी चेतना की प्राप्ति होती है। शिक्षा से मानव ऐसी शक्ति प्राप्त करता है, जिससे वह जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष करने योग्य आत्म विश्वास जागृत कर सके। शिक्षा बालक की अंतर्निहित शक्तियों एवं प्रतिभाओं को उभार कर उन्हें पूर्ण विकसित तथा पोशित करती है। बालक के सम्पूर्ण विकास तथा अंतर्निहित क्षमताओं के पल्लवन में शालेय वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय का वातावरण ऐसा हो, जो बालक की उचित भावनाओं, इच्छाओं तथा विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करे।
पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन द्वारा बालकों की क्षमताओं को पहचानने तथा उनके विकसित होने के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य उन्नत हो सके। भयमुक्त, रूचि व क्षमता अनुकूल वातावरण में बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है तथा मानसिक रूप से स्वस्थ बालक परिवार, समाज व देश के लिए अमूल्य योगदान दे सकता है।
बालक की सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार के पश्चात विद्यालय का दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है। बालक के मानसिक, बौद्धिक, सृजनात्मक तथा अन्वेषणात्मक विकास में शालेय वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

कुप्पूस्वामी के अनुसार मानसिक रूप से स्वस्थ समायोजित व्यक्ति में निम्नांकित विशेषताएँ पायी जाती हैं
"सहनशीलता, आत्मविश्वास, जीवनदर्शन, संवेगात्मक परिपक्वता, वातावरण का ज्ञान, सामंजस्य की योग्यता, निर्णय करने की योग्यता, वास्तविक संसार में निवास, शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति ध्यान, आत्म सम्मान की भावना, व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना एवं आत्म मूल्यांकन की क्षमता।"
यह सर्वविदित है, कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान एवं शिक्षा दोनों को एक दूसरे से भिन्न नहीं किया जा सकता है। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत बनाए रखना है। शालेय व शालेय शिक्षा से कुछ सुस्पष्ट और निहित उम्मीदों के साथ विद्यार्थी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लेता है। शिक्षाप्रणाली की मांग तथा सीखने वाले (विद्यार्थी) की उम्मीदों व विशेषताओं के बीच होने वाले संघर्ष के कारण मानसिक समस्याएँ उत्पन्न होती है।

वर्तमान समय में इस तरह का संघर्ष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए प्रतिस्पर्धा, अभिभावकों की आकांक्षाएँ, विफलता का भय आदि कारण है, जो इस तरह के संघर्ष के लिए उत्तरदायी है। शैक्षिक प्रक्रिया की कार्यशैली इसके प्रतिभागियों के लिए तनाव का कारण बन सकती है। शैक्षिक प्रक्रिया की सुविधाएँ, शिक्षण रणनीतियाँ तथा शिक्षकों की व्यवहार शैली आदि विद्यार्थियों के तनाव का कारण बन सकती है, यदि ये विद्यार्थियों की आवश्यकताओं व जिज्ञासाओं का निराकरण पर्याप्त एवं प्रभावी ढंग से करने में अक्षम हों।

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है, कि अधिकांश सक्षम अभिभावकों का झुकाव शासकीय विद्यालयों की तुलना में अशासकीय विद्यालयों की ओर अधिक है। शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शालेय वातावरण में क्या अंतर है? शालेय वातावरण तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच क्या संबंध है? आदि प्रश्नों के समाधान हेतु इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई।

2. समस्या कथन (Statement of Problem): रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।

3. अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study)

i) रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का अध्ययन करना।
ii) रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
iii) रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य व शालेय वातावरण के बीच पाये जाने वाले संबंध का अध्ययन करना।

4. अध्ययन की परिकल्पनाएँ (Hypotheses of the Study)

H_1) रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_2) रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_3) रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

5. अनुसंधान विधि (Research Method): प्रस्तुत शोधकार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति तथा परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु आँकड़े एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

6. जनसंख्या (Population): प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा रायपुर जिल के चारों विकासखण्डों– धरसींवा, आरंग, अभनपुर एवं तिल्दा के अंतर्गत आने वाले उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

7. न्यादर्श (Sample): प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य प्रतिदर्श विधि में से अनियत प्रतिदर्श विधि (Random Sampling) का प्रयोग कर रायपुर जिले की चयनित शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक शालाओं में से कक्षा 10वीं में अध्ययनरत् 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

8. उपकरण (Tools): प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नांकित उपकरणों का चयन किया गया है–

1. शालेय वातावरण परीक्षण– डॉ. के.एस. मिश्रा
2. मानसिक स्वास्थ्य बैटरी– ए.के.सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता

9. सांख्यिकी अभिप्रयोग (Statistical Techniques): परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस हेतु आवश्यक सांख्यिकी– मध्यमान, मानक विचलन, 'Z' मान तथा सहसंबंध गुणांक की गणना की गई।

10. विश्लेषण, विवेचना एवं निष्कर्ष (Analysis, Discussion and Rasult)

परिकल्पना H_1 – रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्र. 1: शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का सांख्यिकीय विवरण –

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	'Z' का मान
1.	शासकीय	250	180.89	32.15	–2.76
2.	अशासकीय	250	188.48	29.18	

परिकल्पना H_1 के परीक्षण हेतु शासकीय विद्यालयों से 250 व अशासकीय विद्यालयों से 250 विद्यार्थियों का चयन कर शालेय वातावरण मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'Z' मान की गणना की गयी। सारणी क्र. 1 से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 180.89 व 188.48 तथा प्रमाणिक विचलन 32.15 व 29.18 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य 'Z' का मान –2.76 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर 'Z' मान –1.95 से कम है। अतः परिकल्पना H_1 निरस्त की जाती है।

परिकल्पना H_2 – रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्र. 2: शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों का शालेय वातावरण का सांख्यिकीय विवरण–

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	'Z' का मान
1.	शासकीय	250	82.85	9.65	–11.03
2.	अशासकीय	250	91.98	8.75	

परिकल्पना H_2 के परीक्षण हेतु शासकीय विद्यालयों से 250 तथा अशासकीय विद्यालयों से 250 विद्यार्थियों का चयन कर मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का प्रशासन किया गया। प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'Z' मान की गणना की गयी। सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है, कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 82.85 व 91.98 तथा प्रमाणिक विचलन 9.65 व 8.75 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य 'Z' का मान –11.03 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर 'Z' मान –1.95 से कम है। अतः परिकल्पना H_2 निरस्त की जाती है।

परिकल्पना H_3 – रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्र. 3:– शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों का विद्यार्थियों के शालेय वातावरण एवं उनके मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध का सांख्यिकीय विवरण–

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या N	सहसंबंध गुणांक (R) का मान
1.	शालेय वातावरण	500	0.07
2.	मनसिक स्वास्थ्य	500	

सारणी क्र. 3 से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण एवं उनके मानसिक स्वास्थ्य के बीच सहसंबंध गुणांक की गणना की गई। शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के बीच प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान 0. 07 है,जो कि 0.05 सार्थक स्तर व 498 df पर प्राप्त मान .088 से कम है। अतः स्पष्ट है, कि शालेय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं। अतः परिकल्पना H_3 स्वीकृत की जाती है।

11. निष्कर्ष (Result)

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया। टण्डन एवं गुप्ता (2005) ने अपने अध्ययन में शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर पाया। चामुंडेश्वरी, एस. एवं इझी लारासी, ए. (2006) ने अपने अध्ययन में शासकीय, अनुदान प्राप्त तथा अशासकीय शालाओं के शालेय वातावरण में अंतर पाया।
2. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया। जासमीन (2014) ने अपने अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया।
3. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण तथा उसके मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

12. संदर्भित ग्रंथ (References)

1. भटनागर, सुरेश (2002), आधुनिक भारतीय शिक्षा ओर उसकी समस्या, मेरठ आर. लाल बुक डिपो पृष्ठ 23–75।
2. डच, अलबर्ट एवं फिशमैन हेलेन, The encyclopedia of mental health vol 1, A division of franklin watts Inc 575, New York 22 pg. 37.69.
3. गर्ग, एम. एल. (1971), शिक्षालय स्वास्थ्य, म. प्र. ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृष्ठ 3–39।
4. गेरेट, हेनरी ई. (1980) – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी प्रकाशन, लुधियाना।
5. कपिल, डॉ. एच. के. (1991), आधुनिक नैदानिक मनोविज्ञान, हरप्रसाद भार्गव कचहरी घाट, आगरा पृष्ठ 466–507।
6. मिश्रा, डॉ. के. एस. एवं अरोरा, डॉ. सरोज, शालेय वातावरण इनवेन्टरी के लिए नियम पुस्तिका ।
7. ओझा, डॉ. आर. के. (1991), असामान्य मनोविज्ञान, हरप्रसाद भार्गव कचहरी घाट, आगरा पृष्ठ 521–532।
8. पाठक, पी. डी. (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ 513–529।
9. सिंह, अरूण कुमार (2001), शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन प्रकाशक एवं वितरक पृष्ठ 1–130 ।
10. शर्मा, आर. ए. (2013), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया, आर. लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ पृष्ठ 29–753।
11. श्रीवास्तव डॉ. डी. एन. एवं वर्मा डॉ. प्रीति (2001), मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ 152–349।
12. डीमर, एस.ए.(2004). उच्च माध्यमिक की कक्षाओं में कक्षा लक्ष्य अभिविन्यासः शिक्षक मान्यताओं और कक्षा के वातावरण के बीच प्रत्यक्षीकरण कड़ी, शैक्षिक अनुसंधान एवं विस्तार के जर्नल 46(1):73.90.
13. द्विवेदी (2005), शालेय वातावरण का प्रभाव और छात्रों की अनुमोदित शैक्षणिक उपलब्धि, शैक्षिक अनुसंधान एवं विस्तार के जर्नल, 36(3), 207, 210.
14. बडोला, एस. (2013), सिनियर सेकेण्डरी स्कूल के छात्रों के घर के माहौल तथा शालेय वातावरण का उनकी निर्णय परिपक्वता के संबंध में एक अध्ययन, Educationia confab ISSN: 2320.009 X, Vol 2, no. 4, April 2013.
15. गोयल, डॉ. सुनिता (2013), मानसा जिले के कक्षा 10 वीं के किशोरवय विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन, IJEREI] ISSN 2231.0495, Vol 3 (5), sept 2013.
16. स्वाति मिश्रा एवं मीता झा (2015), लिंग एवं निवास की मानसिक स्वास्थ्य पर भूमिका, (ISRO-JHSS),Vol 20;3),e-ISSN 2279.0837, pg 51.55.